एकता से प्रेम एवं शांति की दुनियाँ बनेगी : दादी रत्न मोहिनी जी

आबूपर्वत,ज्ञानसरोवर,४जुलाई२०१४। आज ज्ञानसरोवर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं इसकी भगिनी संस्था आर ई आर एफ की शाखा कला एवं उद्योग प्रभाग द्वारा एक अखिल भारतीय सम्मेलन एवं चिंतन शिविर का आयोजन दीप प्रज्वलित करके संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में देश भर के विभिन्न क्षेत्रों से करीब ५०० से भी अधिक व्यापारियों एवं उद्योगकर्मियों ने हिस्सा लिया। इस सम्मेलन का विषय रहा, व्यवसाय में महापरिवर्तन के लिए ईश्वरीय शक्तियों की प्राप्ति।

संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रत्न मोहिनी जी ने सम्मेलन को अपना आर्शीवचन इन शब्दों में दिया। आपने कहा कि ओम शांति ही परमपिता परमात्मा का दिया गया वह महामंत्र है जिससे से हम हर प्रकार के विषय विकारों से स्वयं को बचा पाते हैं। इसका अर्थ यह भी है कि हम सभी आत्माएं हैं : देह से अलग हैं। परमपिता परमात्मा जो परमधाम निवासी हैं वे हमारे परमापिता हैं। यह खुशी की बात है आप सभी ऐसा महसूस करते हैं कि ईश्वरीय शक्तियों के आधार पर अब महापरिवर्तन होने वाला है। भगवान ने वादा किया है कि धर्म की ग्लानि के समय मेरा अवतरण होगा और मैं अधर्म का विनाश करके सत्य धर्म की स्थापना करूंगा। उनका अवतरण हो चुका है और सत्य धर्म की स्थापना फिर से हो रही है। आप सभी इस बात को स्वीकार करते हैं यह बहुत ही खुशी की बात है। महापरिवर्तन होने वाला है इसका प्रमाण है कि आज अतिधर्म ग्लानि हो चुकी है। इस धर्मग्लानि के बाद महाविनाश एवं फिर परिवर्तन होने ही वाला है। अनेकता के कारण शांति एवं प्रेम बंट जाता है। एकता के लिये राजयोग का अभ्यास आवश्यक है। इसका लाभ लेने के लिए आप सभी पधारे हैं : इसका अभ्यास कीजिये।

कला एवं उद्योग प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी योगिनी बहन ने उक्त अवसर पर अपने उद्गार प्रकट किये। आपने कहा कि हम जानते हैं कि परमात्मा अनंत शक्तियों के भंडार हैं। हमें उनकी शक्तियों को अपने अनुभव में उतारने का प्रयत्न इन तीन दिनों में करना होगा। हम सूक्ष्म आत्मा एवं स्थूल शरीर से मिलकर बने हैं। ईश्वरीय शक्तियों की प्राप्ति करने वाली है आत्मा। स्व आत्मा को जगा कर ईश्वरीय शक्तियों का संग्रहण करने की तैयारी हमें अभी से करना है। मन को परमात्मा के प्रेममय सूक्ष्म स्वरूप पर टिका देना ही राजयोग है जो श्रेष्ठतम योग है। यह जीवन को श्रेष्ठतम बना देता है। संपूर्ण ईश्वरीय शक्तियाँ इसी राजयोग के द्वारा हमारे अपने स्व स्वरूप में संग्रहित हो जाता है। हम व्यावहारिक रूप से इसका अभ्यास यहाँ करेंगे।

कला एवं उद्योग प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका राजयोगिनी गीता बहन जी ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम का भी संचालन किया। आपने संस्थान का परिचय भी दिया। बताया कि यह संस्था विगत ७८ वर्षों से समाजिक कल्याण के लिए आध्यात्मिकता का प्रशिक्षण पूरी दुनियाँ के लोगों तक पहुँचा रही है।

प्रख्यात उद्योगपति तथा कला एवं उद्योग प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक राजयोगी एम एल शर्मा जी ने उक्त अवसर पर कहा कि परमात्मा की शक्तियों की चर्चा करना ही कितने सौभाग्य की बात है। यहाँ परमात्म शक्तियों के प्रत्यक्ष रूप को देखने एवं समझने तथा अनुभव करने का आपको अवसर मिलेगा। दादा लेखराज जी ने अपना सब कुछ ईश्वर अर्थ समर्पित कर दिया। वे परिवार सहित यज्ञ में समर्पित हो गये। आज वह यज्ञ पूरे विश्व में फैल गया। मुझे परमात्मा का सत्य परिचय इसी संस्थान में प्राप्त हुआ। मेरा दावा है कि सिवाय ब्रह्माकुमारियों के परमात्मा का सत्य परिचय और कोई दे नहीं सकता। यहाँ के भाई बहनों का त्याग अद्वितीय है। इनके त्याग को देख कर ही मैंने भी इसके नियमों पर चलने का निश्चिय सन १९६५ में ही कर लिया और आज तक भी इनके नियमों पर पूरी तरह चल रहा हूँ। इनसे संपर्क के बाद मेरा व्यवसाय अनेक गुणा वृद्धि को प्राप्त हुआ है। आदर्श पुरुष ब्रह्मा बाबा का जीवन हमारे लिये एक प्रकाश स्तंभ है । मैं स्वयं को पद्मापद्म भाग्यशाली समझता हूँ। तनाव मुक्त जीवन जीने के लिये यह ज्ञान अत्यंत आवश्यक है।

मुंबई से पधारे हुए वरिष्ठ अभियंता बी के हरीश भाई ने व्यापार एवं उद्योग प्रभाग के बारे में बताया। आपने कहा कि जैसा कि इस संस्थान का नाम है : यह एक ईश्वरीय विश्वविद्यालय है तो यहाँ पढ़ाई भी होती ही है। यहाँ सहज राजयोग की शिक्षा प्रदान की जाती है जिसके अभ्यास से हमारे जीवन में वास्तविक सुख एवं शांति का सदाकालीन समावेश हो जाता है। हम प्रति वर्ष इस प्रभाग का दो तीन

सम्मेलन आयोजित करते हैं। हमारी संस्था देश के विभिन्न बड़े बड़े कार्पोरेट संस्थानों में स्व प्रबंधन, नेतृत्व प्रबंधन, समय प्रबंधन, निद्रा प्रबंधन एवं इस प्रकार के विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित करते रहते हैं। आने वाले एक वर्ष में हम महा परिवर्तन के लिए ईश्वरीय शक्तियों की प्राप्ति विषय पर अनेक कार्यक्रम देश विदेश में आयोजित करते रहेंगे।

थर्मो ग्रूप हैदराबाद की निदेशक बहन उमा ने आज के अवसर पर कहा कि मेरा सौभाग्य है कि मैं यहाँ आप सभी को संबोधित कर रही हूँ। आज से करीब २५ वर्ष पूर्व मैंने आत्मा एवं परमात्मा का ज्ञान इनसे प्राप्त किया है। अन्य संस्थाओं के भी संपर्क में मैं रही और आज मैं दावा कर सकती हूँ कि इनका ज्ञान सर्वोत्तम है क्योंकि ये प्रेम की चासनी में डुबा कर ज्ञान प्रदान करती हैं। इनकी सद्भावना एवं प्रेम हृदय को छू लेती है। इनका ज्ञान आचरण में उतार लेने से जीवन धन्य धन्य हो जाता है। इनके जितना प्रेम अपने जीवन में उतारने की मेरी चेष्टा रहती है। मेरी विनती है कि आप यहाँ का पूर्ण लाभ लें।

हैदराबाद की एक प्रख्यात ऑटोमोबाइल कंपनी के संचालक प्रभू किशोर जी ने कहा कि एफ ओ पी के एक कार्यक्रम में शिरकत के बाद मेरी सोच परिवर्तित हो गई। मैंने बहन शिवानी का कार्यक्रम भी देखा। मुझे विश्वास है कि जब मैं वापस जाऊंगा तो मैं काफी प्रबुद्ध होकर जाऊंगा। मैं यहाँ के अद्भुत वातावरण से अल्हादित हूँ।

ब्र.कु. मोहन भाई जी ने कार्यक्रम में भाग ले रहे सभी लोगों को धन्यवाद दिया। ***(रपट : बी के गिरीश, ज्ञानसरोवर)***